पुस्तक समीक्षा

पुस्तक– ग्राम्य गीतांजलि
लेखक– प्रो0 योगेश चन्द्र दुबे
प्रकाशक– शिव भारती पब्लिशर्स
एण्ड डिस्ट्रीव्यूटर्स इलाहाबाद
मूल्य–200
पृष्ठ– 96
मो0– 0945203222

अवधी के आदि कवि अमीर खुसरों, मलिक मुहम्मद जायसी एवं महाकवि सन्त तुलसीदास जी के काव्यों ने भारतीय वाड़मय में अवधी को जो महत्त्व दिलाया वह महत्त्व किसी अन्य लोक भाषा को उसका कोई भी कवि नहीं दिला पाया। आज जायसी के पद्मावत् एवं तुलसी के रामचरित मानस की गणना विश्व साहित्य की श्रेष्ठतम कृतियों में की जाती है।?

अवधी की श्रेष्ठता के बावजूद व्रजभाषा एवं भोजपुरी की मिठास का आकर्षण अलग ही रहा है। व्रजभाषा का प्रभाव ब्रज क्षेत्र से लेकर अवध में तमाम जनपदों तक छाया रहा है। प्राचीन अवधी साहित्याकाश में कुतुबन, मंझन, मुल्ला दाउद, मौलवी मुहम्मद गौस, कबीर, घाघ, नेवलदास आदि के अभ्युदय के साथ अवधी साहित्य का जन्म हुआ इसी के साथ–साथ अर्वाचीन अवधी साहित्यकारों में जैसे अशोक अज्ञानी, पढ़ीस, बेकल उत्साही, रमईकामा, बंशीधर शुक्ल, रमाशंकर यादव बिद्रोही, रफीक साहनी, युक्ति भद्र दीक्षित, सबल सिंह चौहान आदि कवियों ने अवधी साहित्य को एक नया आयाम प्रदान किया। उसी आयाम को आगे बढ़ाते हुए प्रो0 योगेश चन्द्र दुबे ने ग्राम्य गीतांजलि नामक अप्रतिम कविता संग्रह को सुधी जनों हेतु प्रेक्षणार्थ प्रस्तुत किया है। कवि ने जीवन के सारभूत वह सब जो देखा, सुना, पढ़ा और समझा प्रस्तुत कृति में सरल सुबोध शैली में संजोकर रख दिया है। इसमें जीवन निर्माण एवं उत्साह, प्रेरणा तथा शक्ति प्रदान करने वाली अनेक कविताओं का संग्रह है।

कवि ने अपनी कविता ''माँ सब में स्नेह भर दे'' में समाज में मानवता के दमन एवं दानवता की वृद्धि रूपी जो कल्पना समाज एवं संस्कृति को समाप्त कर रही है उसका बड़ा ही मार्मिक चित्रण प्रस्तुत किया है।

मानवता चीत्कार कर रही
दानवता फुफकार कर रही
पीड़ित शोषित धरा विकल है
ऋषि–संस्कृति चीत्कार कर रही।

Scanned with CamScanner

'जय हनुमान हरे', 'बाबा पवन कुमार' नइया के खेवैया यह चित्रकूट वन नन्दन है चित्रकूट बनवा में, आदि कविताओं के माध्यम से कवि ने भगवान सीताराम एवं उनके प्रिय शंकर सुवन, हे केशरी नन्दन, बाबा पवन कुमार के प्रति निवेदित विविधि भक्ति भाव संवलित सुमधुर भावों से ओतप्रोत अवधी, भोजपुरी एवं खड़ी बोली में गुम्फन किया है।

कवि नें आधुनिक सामाजिक परिवेश में रामायण की प्रासंगिकता को अपनी व्यंग्यात्मक शैली में कविता के माध्यम से समाज के किंकर्तब्यविमूढ लोगों को जागृत करने की बात कही है।

पहले दशरथ खुद बन जाओं इसको आज बताए कौन?

xx xx

कौसल्या का चरित्र कहाँ से, इनको आज सिखाए कौन?

xx xx

रामायण का भाव न जाने राम चरित अपनाए कौन?

ग्राम्य गीताजंलि के गीतपयस्विनी खण्ड के 12 गीतों के माध्यम से कवि ने अवधी एवं भोजपुरी भाषा के माध्यम से लोक चेतना की अभिव्यक्ति की है। कवि ने नव युग के निर्माण में हमारी क्या भूमिका है उसको ओज से परिपूर्ण कविता 'ग्रामोदय से कल्प' के माध्यम से प्रस्तुत किया।

नव विकास का सूर्य उगेगा, तिमिर नहीं रह पाएगा।
गांवों में बिजली पानी हो स्वर्ग धरा पर आएगा।
अन्धकार कितना ही हो पर सूरज कभी न हारा है।
गावों का उत्थान करेंगे यह सकल्प हमारा है।

इन कविताओं से स्पष्ट हो जाता है। कवि का जीवन गाँव की धूल से धूसरित तनों में, बंसन्त के पटोही रूपी मन में कहीं न कहीं मिट्टी की सुगन्ध अपनी मादकता को मूर्ति रूप दे रही है।

कवि की कविताओं में कवित्व के संसार उसकी अपनी माटी जौनपुर से ही मिले है लेकिन कार्ययित्री प्रतिभा मन्दाकिनी में पुण्य तट चित्रकूट से मिला है। कवि अपने गाँव का चित्र ''अपनापन '' इस कविता में आधुनिकता की चादर को ओढ़ नहीं रहा पर उसे अपना नहीं पुराना गाँव ही याद आता है।

लौटा दो लौटा दो मेरे गाँव का अपनापन।
कहाँ गयी वो थाती माटी कहाँ वो भोलापन।।

वास्तव में आज गाँव का समाज समस्त मानवताओं भोलेपन एवं परम्पराओं को भूलता जा रहा है आधुनिकता की दौड़ में कहीं गिर न पड़े इसका भी ध्यान नही रह गया है।

Scanned with CamScanner

इसी प्रकार ग्राम्य गीतांजलि के तीसरे खण्ड गीतगंगा में कवि ने राष्ट्रीय चेतना, सामाजिक चेतना एवं सामाजिक पृष्ठभूमि में जिन 15 गीतों की रचना जो खड़ी बोली में की है वह सभी वास्तव में जीवन कें संघर्षों को उजागर करते हैं।

रोज नए गम से परेशान हो गयी।
जिन्दगी दुःखों के जैसे नाम हो गयी।।

xx xx

जिन्दगी का कर्ज ढोना पड़ रहा है।
हर गमों को हँस के धोना पड़ रहा है।।

इसी क्रम में कवि के राष्ट्र प्रेम का जो स्तम्भ खड़ा दिखाई देता है वह वास्तव में भारतीय नौनिहालों एवं नौजवानों के लिए प्रेरणा स्त्रोत है।

आजाद है। "आजाद" को हम याद रखेंगे।
इस देश की आजादी को आबाद रखेंगे।।

xx xx

गणतन्त्र दिवस जब आता है।
निज गौरव ध्वज लहराता है।।

इस प्रकार गीतमंदाकिनी, गीतपयस्विनी एवं गीत गंगा की तीनों धाराओं की त्रिवेणी से ग्राम्यगीतांजलि का जो संगम काव्य जगत में बहाने का भगीरथ प्रयास कवि ने किया वह वास्तव में श्लाध्य है। उसमें प्रत्येक भावुक चाहे डुबकी लगाएं, चाहे गोते लगाए चाहे किनारे पर नहाये या बीच धार में अवगाहन करे सर्वविधि आनन्द रस का पान ही करता रहेगा।

मन में तरंग है जी, होली का ये रंग है जी।
कविता का भंग है जी, थोड़ी पी जाइये।।

समीक्षक
डॉ0 विनय कुमार त्रिपाठी

सम्पादक
शोधमार्तण्ड
एवं विभागाध्यक्ष (साहित्य विभाग)
श्री गौरीशंकर संस्कृत महाविद्यालय
सुजानगंज, जौनपुर (उ0प्र0)

Scanned with CamScanner